डॉक्टर मैं माँ बनना चाहती हूँ...

प्रश्न आपके – उत्तर हमारे

वंध्यत्त्व पर संपूर्ण मार्गदर्शन

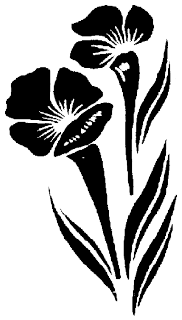

डॉ. चैतन्य शेंबेकर

एम.डी., डीप लॅप (जर्मनी), एफ.आय.सी.ओ.जी.

प्रसूती एवं स्त्रीरोग तज्ञ

डॉ. चैतन्य शेंबेकर

ओमेगा हॉस्पीटल

शेंबेकर हॉस्पीटलस् प्रा. लि.

प्लॉट नं. ५३, एल.आय.सी. कॉलनी,

अजनी चौक, खामला रोड,

नागपुर–४४० ०१५

● Ph. : +91-712-6619554

● M : (H) 95521 77747, 7774055411

Website : www.chaitanyashembekar.com

www.omwomenshospital.com

टाईपसेटिंग, मुखपृष्ठ एवं मुद्रक

हरसुलकर कम्प्युटर सेंटर,

बजाज नगर, नागपुर, मोबाइल : ९३७०१३८३७०

O M E G A

H O S P I T A L

A Unit of Shembekar Hospitals Pvt. Ltd.

Women's Health Care Under One Roof

POST GRADUATE INSTITUTE & RESEARCH CENTRE

TEST TUBE BABY &
LAPAROSCOPY CENTRE

D I R E C T O R S

Dr. CHAITANYA SHEMBEKAR
M.D., Dip. Endoscopy (Germany),
Dip. Lap., F.I.C.O.G., F.I.C.M.C.H.
Obstetrician & Gynaecologist
Laparoscopic Surgeon, IVF Consultant

Dr. MANISHA SHEMBEKAR
Anaesthesiologist
M.B.B.S., M.D., D.A.

Plot No.53, LIC Colony, Ajni Chowk, Khamla Road,
Nagpur-440 015 ● Ph.+91-712-6619554
● M : 95521 77747, 7774055411
Website : www.chaitanyashembekar.com,
www.omwomenshospital.com

Facilities Available :

- IVF and ICSI
- IUI Laboratory
- Sperm Bank
- Laparoscopy
- Hysteroscopy
- Color Doppler Ultrasound
- Balloon Ablation Therapy
- Non Stress Test
- Colposcopy
- Painless Labour

About Hospital :

- 30 Beds, 7500 sq.ft. area
- Located in the Heart of city
- Spacious out patient & O.T. Complex
- Spacious AC rooms
- Economy rooms
- 24 x 7 Resident Doctor
- Physiotherapy and Nutrition Dept.
- In-house Pathology Laboratory
- Central Oxygen Supply
- Fully Computerised Hospital
- Cash less Insurance Schemes
- Affiliated to CECR for Research Work
- Medicine Shop

प्रश्न : वंध्यत्व (बाँझपन) की परिभाषा क्या है?

उत्तर : विवाह के पश्चात एक वर्ष पूर्ण होने के बाद भी यदि गर्भधारणा नहीं हुई तो इसे वंधत्व या बाँझपन कहते हैं। इस कालावधि में स्त्री पुरुष के शारिरीक संबंध नियमित होने चाहिये।

प्रश्न : मेरी उम्र ३५वर्ष है। मेरी शादी को ६ माह हो चुके हैं। क्या मुझे कोई इलाज शुरु करना चाहिये?

उत्तर : जी हॉ, देर से शादी या बडी उम्र में शादी होने वाले दंपत्ती को ६ माह होने के बाद तुरंत इलाज शुरु करना चाहिये क्यों कि ३५ से अधिक उम्र होने पर आपके पास समय बहुत कम रह जाता है।

प्रश्न : बचपन से मुझे अनियमित मासिक स्त्राव और मोटापे की शिकायत हैं। मुझे PCOS है ऐसा बताया गया है। मैं क्या करुं?

उत्तर : ऐसे समय तुरंत ही इलाज शुरु करना चाहिये। शादी के ६ माह के पश्चात डॉ. की सलाह लेने में कोई हर्ज नहीं।

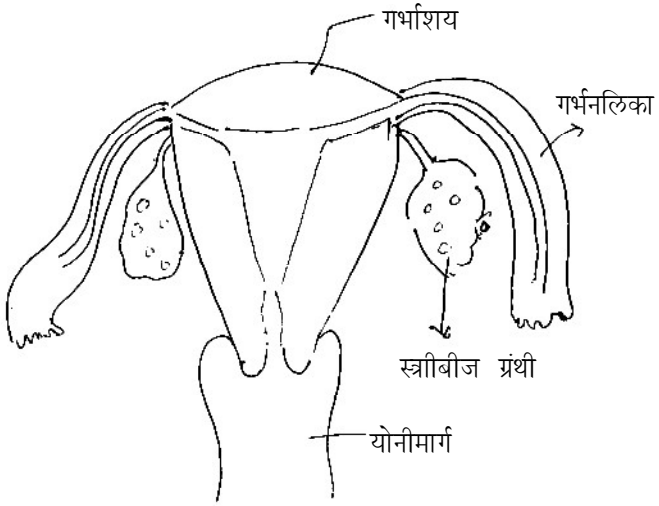

गर्भाशय की रचना

संक्षेप में कहा जाए तो शादी के पश्चात १ वर्ष के अंदर गर्भधारणा होनी चाहिये। परंतु यदि शादी के समय उम्र अधिक हो अथवा अन्य कोई प्रॉब्लेम हो तो ६ माह के अंदर डॉक्टर की सलाह लेना उचित होता है।

प्रश्न : किस कालावधि में शारिरिक संबंध रखने से गर्भधारणा की संभावना अधिक होती है?

उत्तर : जिन स्त्रियों का मासिक स्त्राव २८ दिनों में शुरु होता है, उनका ओव्हूलेशन १४ वे दिन होता है, और जिनका पिरेड का समय ३० दिन का होता है, उनका ओव्हूलेशन १६ वे दिन होता है, अर्थात अगला पिरेड शुरु होने के १४ दिन पहले ओव्हूलेशन होता है। किन्तु दिन निश्चित नहीं होता। १–२ दिन आगे पीछे हो सकते हैं। इसीलिये जिनका पिरेड नियमित २८ या ३० दिन में आता है उन्हें १० वे दिन से प्रतिदिन या १ दिन के आडे संबंध रखना चाहिये।

प्रश्न : संबंध के पश्चात वीर्य बाहर निकल जाता है इसीसे तो गर्भधारणा में देरी नही होती?

उत्तर : उसकी चिंता मत कीजिये। शुक्राणु अंदर जाते हैं अत: विर्य बाहर भी निकला तो चिंता नही।संबंध होने के बाद १० मिनट कमर के नीचे तकिया रखकर लेटे रहिये।

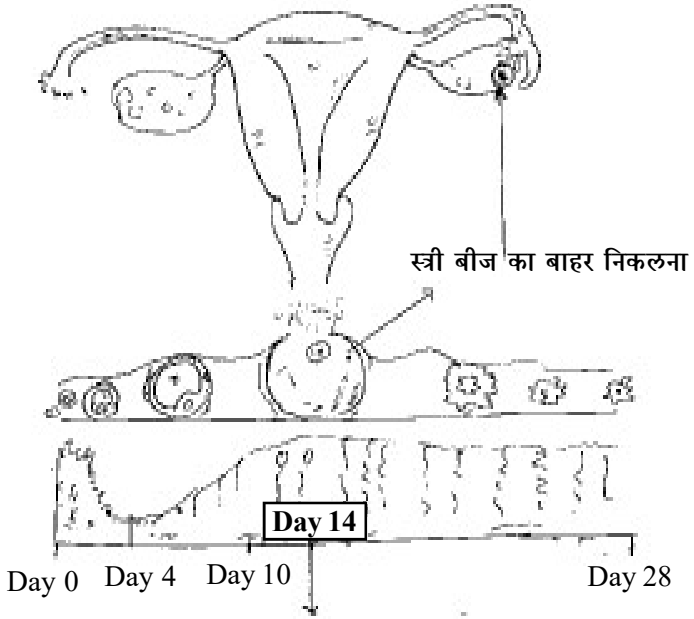

४ दिन मासिक स्त्राव होता है।

मासिक स्त्राव के १४ वे दिन स्त्रीबीज ग्रंथी से स्त्री बीज बाहर निकलता है। उस दिन गर्भाशय का आंतरिक भाग मोटा होता है।

संक्षेप में २८ दिन का पिरेड की सायकल हो तो १४ वा दिन महत्त्वपूर्ण होता है।

प्रश्न : गर्भधारणा के लिये कौनसी बातें आवश्यक हैं?

उत्तर : १) नियमित शारिरिक संबंध।

२) नियमित मासिक स्त्राव (पिरेड)

३) सामान्य वजन (ऊंचाई और वजन का प्रमाण महत्त्वपूर्ण होता है। BMI २० से २५ होना चाहिये

४) उम्र ३५ के अंदर

५) योग्य शरीर रचना अर्थात स्त्री बीज ग्रंथी (ओव्हरीज), गर्भनलिका (फॅलोपियन ट्यूब) गर्भाशय (युटरस) और योनीमार्ग (व्हजायना) नॉर्मल होना चाहिये।

प्रश्न : मेरे पति तंबाखू खाते हैं। डॉ ने उनके शुक्राणुओं की संख्या कम बताई है। पुरुषों के लिये कौनसी बातें आवश्यक हैं ?

उत्तर : पुरुषों के वीर्य जाँच में दोष हो सकता है। वीर्य में शुक्राणुओं की संख्या कम से कम २० मिलियन होनी चाहिये। उसमें इंफेक्शन नही होना चाहिये। तंबाखू, मद्यपान और तनावग्रस्त जीवन के कारण शुक्राणुओं की संख्या कम हो सकती है। कुछ पुरुषों में नपुंसकता (इंपोटन्सी) पाई जाती है। जिसके कारण शारिरिक संबंध रखना असंभव हो जाता हैं ऐसी परिस्थिती में डॉक्टर से सलाह लेना जरुरी है।

प्रश्न : वंध्यत्व के कारण जानने के लिये कौनसी जाँच आवश्यक होती है।

उत्तर : **पुरुषों में** वीर्य की जाँच आवश्यक है। अन्य प्रकार की जाँच याने हार्मोन्स टेस्ट, डॉपलर सोनोग्राफी, Testicular Biospy इत्यादि।

स्त्रियों में हार्मोन्स टेस्ट, यह टेस्ट मासिक स्त्राव (पिरेड) शुरु होने के दूसरे या तीसरे दिन सुबह करनी चाहिये। इसमें कुछ जाँच खाली पेट भी करनी पडती हैं।

FSH, LH, Estradial, T3T4TSH , Serum Prolactin, AMH, Serum Insulin, Blood Sugar, Serum B12, Progesteron, Vitamin D3, Antiovarian antibodies (इनमें से सभी जाँचे आवश्यक नहीं हैं।)

प्रश्न : ट्यूब टेस्ट का मतलब क्या?

उत्तर : इसे ही Hystero Salphingo Graphy कहते हैं।

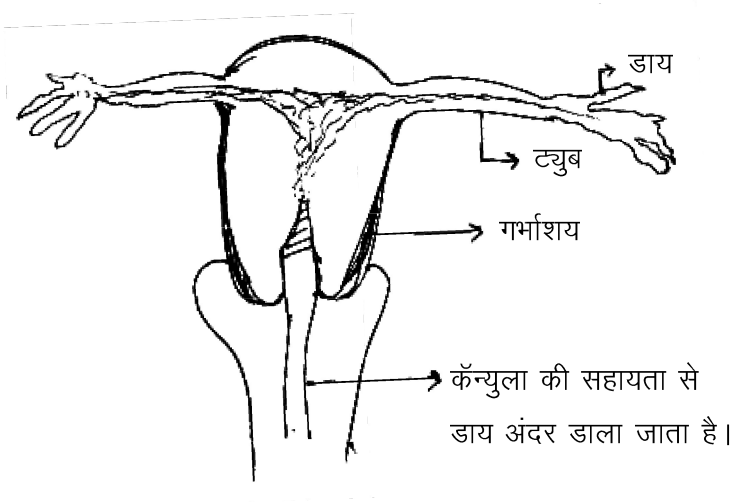

– यह जाँच मासिक स्त्राव के पश्चात तुरंत पहले ४–५ दिन में करनी चाहिये

– यह टेस्ट X-Ray के डॉक्टर्स (रेडिओलॉजीस्ट) से करवानी पडती है।

– इसके लिये सुबह थोडी चाय–पानी लेकर अस्पताल जाना चाहिये।

– इस जाँच में गर्भाशय में कॅन्युला की सहायता से दवाई (डाय) डालकर उसका X-Ray लेते हैं। जिससे गर्भनलिका बंद तो नहीं है इसका पता चलता है। आजकल कुछ डॉक्टर्स यह टेस्ट न करके दुरबीन की सहायता से ऑपरेशन (लॅप्रोस्कोपी) करते हैं। इससे भी गर्भनलिका की स्थिती के बारे में जाना जा सकता है।

प्रश्न : क्या सोनोग्राफी अंदर से करना आवश्यक है ? मुझे इससे तकलीफ होती है।

उत्तर : सोनोग्राफी यह अत्यंत महत्त्वपूर्ण जाँच प्रक्रिया होती है। इसमें गर्भाशय की रचना कैसी हैं इसका पता चलता है। अंदर से सोनोग्राफी (Trans Vaginial Sonugraphy) ज्यादा उचित होती है। क्यों कि इसमें गर्भाशय और स्त्रीबीज ग्रंथी एकदम स्पष्ट दिखाई देती है।

प्रश्न : मेरी सारी जाँचें हो चुकी है और अब डॉक्टर ने मुझे ओव्हूलेशन स्टडी करने के लिये कहा है। इसमें क्या किया जाता है?

उत्तर : साधारणत: पहले बताए हुए जाँच में किसी प्रकार का दोष न निकले तो डॉक्टर्स यह सोनोग्राफी करते हैं। यह मासिक स्त्राव के १० वे दिन के बाद हर रोज या एक दिन आड की जाती है। इसमें स्त्री बीज ग्रंथी (ओव्हरीज) बराबर काम कर रही है या नहीं, ओव्हूलेशन कब हुआ? इसका पता चलता है। यह जानकारी अत्यंत महत्त्वपूर्ण होती है। इसके द्वारा

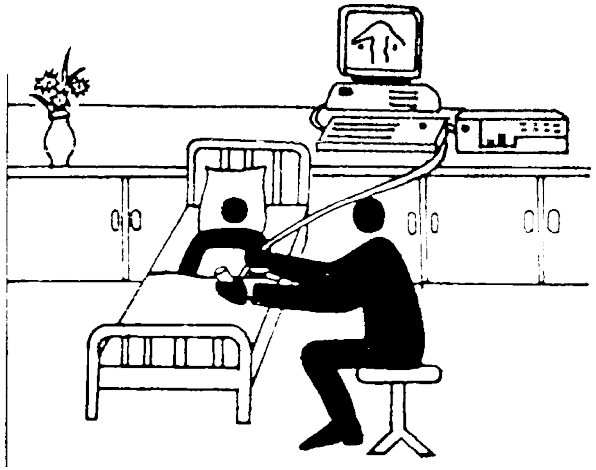

शारिरिक संबंध रखने का सही समय पता चलता है। ताकि गर्भधारणा शिघ्र हो सके। इन सभी जाँच प्रक्रिया में ओव्हूलेशन व्यवस्थित होने के लिये कुछ गोलियाँ तथा इंजेक्शन मी दिये जाते हैं। इसे ही ओव्हूलेशन स्टडी कहते हैं।

इन सब प्रकार की जाँचों के लिये बार बार डॉक्टर के पास जाना पडता है, पर इसके लिये कोई पर्याय नहीं है।

प्रश्न : मेरी शादी को २ वर्ष पूर्ण हुए हैं। उपरोक्त सभी जाँच हो चुकी हैं किन्तु कोई फायदा नहीं। अब डॉक्टर लॅप्रोस्कोपी करने के लिये कह रहे हैं। किंतु मुझे ऑपरेशन से डर लगता है। मैं क्या करुं?

उत्तर : ऐसी स्थिती में लॅप्रोस्कोपी या दुरबीन से ऑपरेशन करना अत्यंत आवश्यक है। क्यों कि लॅप्रोस्कोपी से 'अनेक बाते ज्ञात हो जाती हैं, जैसे गर्भाशय कैसा है? गर्भ नलिका बंद तो नहीं है, स्त्रीबीजग्रंथ पर सूजन तो नही है इत्यादि और इतना ही नही इसमें किसी दोष का पता चलने पर वह तुरंत दूर किया जा सकता है। (See and Treat)

अत: दुरबीन की सहायता से किया गया ऑपरेशन अत्यंत फायदेमंद हो सकता है। इस ऑपरेशन में केवल ५ से १० मिलीमीटर के छेद से दुरबीन डालकर टी.व्ही. पर देखकर ऑपरेशन किया जाता हैं इससे ऑपरेशन एकदम सरल और कम तकलिफ का होता है।

- लेप्रोस्कोपी मासिक स्त्राव पिरेड के ४–५ दिन पहले या ४–५ दिन बाद में किया जाता है।
- जहाँ तक हो पिरेड के बाद करना योग्य है।
- इसके लिये एक दिन पहले दोपहर से द्रव पदार्थ का सेवन आवश्यक होता है जिससे पेट साफ रहें।

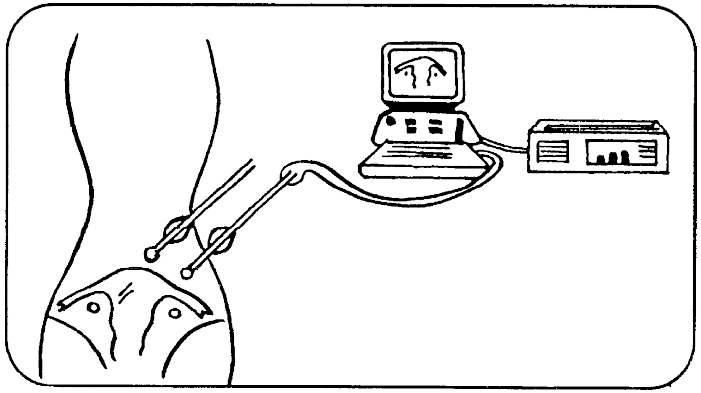

- इसके साथ ही डॉक्टर कुछ गोलियाँ अथवा दवाई देते है। रात में १० बजे के बाद कुछ भी खाना या पीना मना है। सुबह उठकर खाली पेट अस्पताल में पहुँचना चाहिये।
- ऑपरेशन ॲनेस्थेशिया (बेहोशी की दवा) देकर ही किया जाता है।
- ऑपरेशन करते समय नाभी के द्वारा एक दुरबीन (टेलिस्कोप) डाली जाती है। उसके लिये नाभी की स्वच्छता जरुरी है। एक दिन पहले रात को डेटॉल के पानी से नाभी स्वच्छ करके सारा मैल निकालना चाहिए।
- ऑपरेशन के लिये ३० से ६० मिनट की अवधि लगती है।
- ऑपरेशन के ६ घंटे बाद ही पानी पी सकते है।
- शाम को हल्का सा आहार लेना चाहिये।
- उसी दिन शाम को छुट्टी कर दी जाती है।
- दूसरे दिन मरीज पूर्णत: ठीक हो जाता है। वह अपने काम पर जा सकता है यही इस ऑपरेशन का फायदा है।
- टांके निकालने के लिये एक हफ्ते के बाद बुलाया जाता हैं।

कई बार अंदर ही घुलने वाले टाँके लगाये जाते हैं, जिन्हे निकालने की आवश्यकता नही होती।

- इस ऑपरेशन से गर्भधारणा होने की संभावना निश्चित होती है।
- अधिक से अधिक लोगों को ६ माह से १ वर्ष में ही लाभ होता है।

दुरबीन का ऑपरेशन निश्चित ही लाभप्रद होता है। ऑपरेशन का डर मन से निकाल दीजिये।

प्रश्न : IUI क्या होता है?

उत्तर : IUI याने इंट्रा युटेराईन इनसेमिनेशन इसमें वीर्य पर प्रक्रिया करने के बाद वीर्य गर्भाशय में छोडा जाता है।

प्रश्न : सुना है कि इसमें वीर्य दुसरे का होता है। क्या यह सच है?

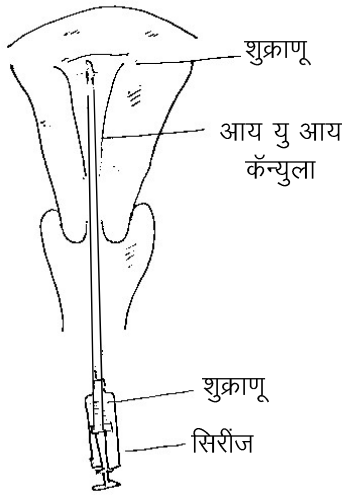

उत्तर : नही, सभी केसेस में ऐसा नहीं होता. IUI दो प्रकार के होते हैं।

१) आयुआय H (Husband) इसमें पति का वीर्य गर्भाशय में छोडा जाता है।

२) आयुआय D (Donor) इसमें वीर्य बँक से लिया जाता है। यह वीर्य किसका है इसका पता नहीं चलता। परंतु इस विर्य की अच्छी तरह से जाँच की जाती है। डोनर की ऊँचाई, ब्लड ग्रुप इत्यादि की जानकारी होती है। आपकी और आपके पति की सम्मती (कंसेट) लेकर ही यह प्रक्रिया की जाती है।

पति के शुक्राणु में दोष होने पर अथवा शुक्राणु न होने पर (Azoospermia) डोनर आय यु आय करते हैं। पति के शुक्राणु व्यवस्थित होने पर उनकाही वीर्य उपयोग में लाया जाता है।

प्रश्न : आय यू आय IUI किस पेशंट में करना योग्य होता है?

उत्तर : जिस पेशंट में वंध्यत्व का कारण ठीक से पता नही चलता, जिनके वीर्य में शुक्राणु थोडे कम परंतु १० मिलीयन से ज्यादा होते है, जिन्हे इंडोमेट्रीयोसिस अथवा PCOS होता है ऐसे केसेस में IUI करना योग्य होता है, परंतु गर्भनलिका Tube) बंद हो या शुक्राणुओं की संख्या एकदम कम हो तो IUI का भी कोई फायदा नही होता।

प्रश्न : IUI की तैयारी कैसी की जाती है?

उत्तर : IUI के लिये पिरेड के दूसरे या तिसरे दिन से इंजेक्शन तथा गोलियाँ दी जाती हैं।

- इसके बाद पिरेड के १० वे दिन से सोनोग्राफी की जाती हैं।
- स्त्राी बीजग्रंथी के स्त्रीबीजों का आकार (Follicle) साधारणत: १८ से २० मिलीमीटर का होने पर HCG का इंजेक्शन लगाया जाता हैं।
- इसके बाद ३६ या ४० घंटो के पश्चात IUI कीया जाता हैं।

प्रश्न : क्या IUI करते समय बहुत तकलीफ होती है?

उत्तर : बिल्कुल नही। IUI के दिन आपको चाय नाश्ता लेकर अस्पताल आना पडता है।

- एक दिन पहले शारिरीक संबंध न हो
- यह प्रक्रिया अॅनेस्थेशिया के बिना होती है।
- एक बारीक नली (कॅन्युला) की सहायता से वीर्य गर्भाशय के अंदर डाला जाता है। यह वीर्य प्रयोगशाला

में प्रक्रिया (वॉश) किया होता है। उसके बाद १५/२० मिनट तक लेटे रहना उचित होता है।

प्रश्न : क्या IUI के बाद बेडरेस्ट जरुरी है?

उत्तर : नहीं। आप अपने काम कर सकती हैं। अगर नौकरी करती हैं। तो काम पर जा सकती हैं। बस डॉक्टर ने दी हुई दवाईयाँ बराबर लेनी है। शारीरिक संबंध रखने में भी कोई हर्ज नहीं। आप योगा या व्यायाम करती होंगी तो उसे चालू रखिये। अगर नही करती तो शुरु कीजिये।

प्रश्न : IUI के बाद क्या पेट में दर्द होता है?

उत्तर : कुछ पेशंट्स के पेट में दर्द होता है। इसके लिये पेनकिलर ले सकते हैं। जैसे क्रोसीन, स्पास्मेलान।

प्रश्न : IUI ज्यादा से ज्यादा कितनी बार कर सकते हैं?

उत्तर : ४ से ६ बार IUI कर सकते हैं। सफलता नही मिलती हो तो बारबार नहीं करना चाहिये।

प्रश्न : IUI में सफलता मिलने की क्या संभावना हैं?

उत्तर : साधारणत: २० प्रतिशत । इसीलिये IUI चार से छ: बार करके देखना पडता हैं।

प्रश्न : IUI होने के बाद कब फिर चेकप करना पडता है?

उत्तर : डॉक्टर द्वारा दी गई दवाईयाँ लेते रहिए। साधारणत: २० दिन के बाद पिरेड शुरु नहीं हुआ, तो युरीन प्रेग्नेंसी टेस्ट करनी होगी। जिससे गर्भधारणा होने या न होने का पता चलता है।

IUI यह इलाज की एक कडी है। टेस्ट ट्यूब बेबी के पहले IUI करने में कोई हर्ज नही।

टेस्ट ट्यूब बेबी

प्रश्न : टेस्ट टयूब बेबी का तंत्रा किन समस्याओं में उपयोगी हैं।

उत्तर : वंध्यत्व के किसी भी केस में टेस्ट ट्यूब बेबी पद्धति का प्रयोग कर सकते हैं। आपके डॉक्टर यह निर्णय लेने में समर्थ होते हैं। अत: उनकी सलाह के अनुसार ही टेस्ट ट्युब बेबी करने का निर्णय लीजिए। आपकी जानकारी के लिये गर्भनलिका (फॅलोपीयन ट्यूब) बंद हो या शुक्राणुओं की संख्या बहुत कम (१० मिलीयन कम) हो तो टेस्ट ट्यूब बेबी का अवलंब करना चाहिये।

टेस्ट ट्यूब बेबी का इतिहास बडा रोचक है। लगातार ४–५ वर्षों के प्रयत्न के पश्चात डॉ. रॉबर्ट एडवर्ड और स्टेप्टो इन दो वैज्ञानिकों को यश प्राप्त हुआ। और पहली टेस्ट ट्यूब बेबी का जन्म हुआ। यह स्वर्णिम दिन था २८ जुलाई १९७८ और उस भाग्यवान बच्ची का नाम था लुईस ब्राऊन। ३० वर्ष बाद याने २००८ में इसी लुईस ब्राऊन को कन्या रत्न प्राप्त हुआ। इस प्रकारसे टेस्ट ट्यूब बेबी द्वारा पैदा हुयी बच्ची भी माँ बन सकती है यह सिद्ध हो गया ।

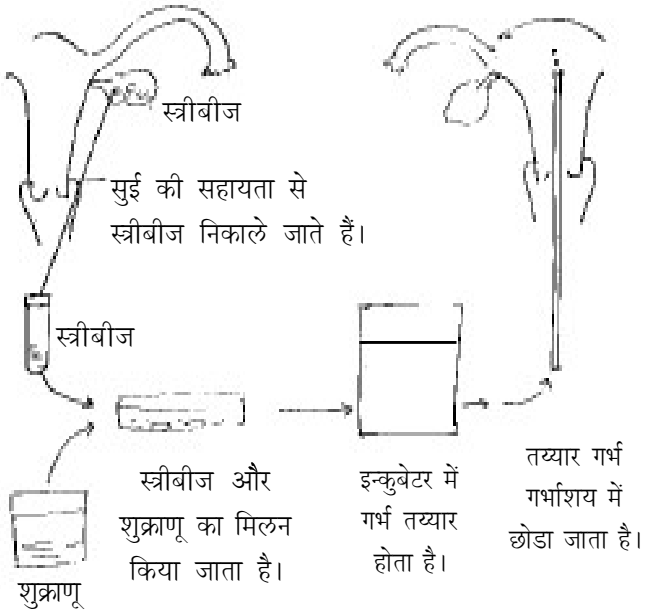

टेस्ट ट्युब बेबी (IVF)
In Vitro Fertilisation

इसके बाद इस विषय पर अनेक संशोधन हुए जैसे १९९२ में ICSI (Intra Cytoplasmic Sparm Injection) की खोज हुई। ICSI टेस्ट ट्यूब बेबी का ही एक भाग है। इसमें एक एक शुक्राणु स्त्रीबीज में छोडा जाता हैं शुक्राणु की संख्या कम होने वालों के लिय ICSI एक वरदान है।

इसके बाद गर्भ (Embryo) को फ्रीज (कायोफ्रीर्जीग) करने की कल्पना सामने आई। आजकल तो स्त्रीबीजों को भी, फ्रीज किया जा सकता हैं।

प्रश्न : टेस्ट ट्यूब बेबी के लिये पहले कुछ जाँच करनी पडती है क्या?

उत्तर : हाँ, टेस्ट ट्यूब बेबी के लिये प्राथमिक (पूर्व) तैयारी व्यवस्थित होनी चाहिये। उसके लिये हार्मोन्स की टेस्ट, हीस्टरोस्कोपी, खून की जाँच तथा पुरुष वीर्य की जाँच होनी चाहिये। ये सारी जाँच होने के पश्चात टेस्ट ट्यूब बेबी के लिये केस योग्य होने पर इंजेक्शन्स लगाये जाते हैं। और उपचार शुरु होता है।

प्रश्न : कहते है कि इसमें बहुत सारे इंजेक्शन्स लगाये जाते हैं। सोच कर ही मुझे बहुत डर लगता है।

उत्तर : घबराने की जरुरत नहीं। आपने इन्सुलीन के इंजेक्शन लेते हुए किसी को देखा है? कितनी सहजता से पेशंट यह इंजेक्शन खुद ही लगा लेते हैं। बिल्कुल वैसे ही हलके और सरल इंजेक्शन्स करीबन २० दिन लगाये जाते हैं। ये इंजेक्शन्स पेट अथवा जांघ में लगाये जाते हैं। आठ दिनों बाद और एक इंजेक्शन १०–१२ दिन लगाते है। ये इंजेक्शन भी हलका और सरल होता है। (HMG / FSH) आजकल नविन उपचार पद्धति में इंजेक्शन के दिन कम हो गए हैं। (Antagonist) के इंजेक्शन याने २१ दिन के बजाय केवल १०–१२ दिन ही इंजेक्शन लगते हैं।

प्रश्न : हमारे गांव में यह सुविधा उपलब्ध नहीं है। क्या डॉक्टर मुझे रोज चेकअप के लिये बुलायेंगे?

उत्तर : शुरु में ५–७ दिन के बाद बुलायेंगे परंतु आखरी के ८–१० दिन रोज या १ दिन छोड के चेक अप के लिये बुला सकते हैं। अत: इसके लिये समय रखिये।

प्रश्न : टेस्ट ट्यूब बेबी में किस प्रकार ट्रीटमेंट करते हैं?

उत्तर : एक निश्चित दिन से रोज इंजेक्शन लगाये जाते हैं। इस इंजेक्शन की सहायता से साधारणत ८–१० बीज तैयार किये जाते हैं। इसे कहते हैं सुपर ओव्हूलेशन। इन बीजों का आकारव्यवस्थित होने पर एक इंजेक्शन लगाया जाता है। (HCG) उसके बाद ३५ घंटों के बाद Test Tube baby की प्रक्रिया शुरु की जाती है।

प्रश्न : ओव्हम पिक अप के दिन किस प्रकार की तैयारी करनी चाहिए?

उत्तर : खाली पेट अस्पताल जाईये।

– शाम तक भरती रहना पडेगा।

– आपको ॲनेस्थेशिया लगेगा।

– ॲनेस्थेशिया देने के बाद आपकी स्त्रीबीज ग्रंथी से बीज निकाला जायेगा।

– यह प्रक्रिया सोनोग्राफी की सहायता से होगी।

– इस प्रक्रिया में टांका नहीं लगेगा। योनी मार्ग से बारिक सुई की सहायता से ये बीज निकाले जायेंगे।

– ये बीज डीश में रखे जायेंगे।
– उसी समय आपके पति का वीर्य लिया जायेगा।
– स्त्री बीज और शुक्राणुओं का मिलन करवाया जायेगा।
– आपको १५ मिनट में होश आ जायेगा तथा शाम को छुट्टी भी (डिसचार्ज) हो जायेगी। रात को हलका भोजन (खिचडी) तथा डॉक्टरने बताई दवाईयाँ ठीक से लीजिये।
– डॉक्टर अपनी अगली प्रक्रिया लेबोरेटरी में शुरु रखेंगे।
– टेस्ट ट्यूब बेबी लेबोरेटरी में एक इन्क्युबेटर में होता है। यह लॅब की आत्मा होती है।
– इस में गर्भ को विभाजन के लिये रखा जाता है।
– दूसरे दिन डॉक्टर गर्भ तैयार हो रहा है, या नही इसको चेक करते हैं।
– तिसरे, चौथे या पांचवे दिन तैयार गर्भ फिर से गर्भाशय (बच्चेदानी) में डाला जाता है। इस दिन को ट्रांसफर का दिन कहते हैं।

प्रश्न : ट्रांसफर के दिन क्या करना होता है?

उत्तर : खाली पेट रहने की आवश्यकता नहीं। डॉक्टर द्वारा बताएनुसार समय पर अस्पताल में उपस्थित होना और सारी दवाईयाँ व्यवस्थित लेना।

– ट्रांसफर की प्रक्रिया अत्यंत सरल होती है।

– इसमें ॲनेस्थेशिया की जरुरत नही होती।

– इस समय केवल मूत्राथैली अच्छी तरह से भरी हुई होनी चाहिये।

– एक बारीक नली की सहायता से (Transfer Catheter) डॉक्टर तैयार गर्भ को थैली के अंदर छोडते हैं। साधारणतः २ या ३ गर्भ (Embryos) अंदर छोडे जाते हैं। इसके बाद कुछ समय तक बेड पर आराम करना पडता है थोडी देर बाद घर जा सकते हैं।

प्रश्न : टेस्ट ट्यूब बेबी के बाद बेड रेस्ट की आवश्यकता है क्या?

उत्तर : नहीं। बेड रेस्ट आवश्यक नहीं है। परंतु –

– ज्यादा मेहनत मत कीजिये।

– जहाँ तक हो आराम कीजिये।

– खाँसी, ज्वर या तत्सम बिमारी या तकलीफ ना हो इसका ध्यान रखिये।

– तनाव से बचिये।

प्रश्न : डॉक्टर आपने कहा २ – या ४ गर्भ छोडे जाते हैं, यदि स्त्रीबीज ज्यादा मिलते हैं। और १०–१२ गर्भ तैयार होते हैं तो बाकी गर्भ क्या व्यर्थ हो जायेंगे?

उत्तर : नहीं वे गर्भ व्यर्थ नही जायेंगे। अतिरिक्त गर्भ हम फ्रीज करके रखते हैं। इसे कहते हैं – क्रायोप्रिजर्वेशन। यदि किसी कारण वश गर्भधारणा नही हुई तो ये गर्भ बाद में भी उपयोग में लाये जा सकते हैं। इसमें अच्छी बात यह है कि फ्रीज किये हुए गर्भ के उपयोग करते समय हमेशा से इंजेक्शन एकदम कम लेने पडते हैं। और तकलीफ भी कम होती है। अर्थात फ्रोजन सायकल में तकलीफ कम होती है।

प्रश्न : इसका Result कब लगता है?

उत्तर : ट्रांसफर होने के पश्चात १४–१५ दिन के बाद मूत्रा जाँच तथाखून की जाँच (B-HCG) करके देखना पडता है। टेस्ट का परिणाम आने तक दवाईयाँ बंद नही करनी हैं। इसके

बाद डॉक्टर से मिलकर उनकी सलाह से अगला उपचार करना चाहिये।

प्रश्न : टेस्ट ट्यूब बेबी में सफलता की गुंजाईश कितनी है?

उत्तर : ३० से ४० प्रतिशत।

प्रश्न : टेस्ट ट्यूब बेबी की प्रक्रिया कितनी बार कर सकते है?

उत्तर : तीन सायकल की जा सकती हैं। कुछ लोंग ५ से ६ सायकल भी करते हैं।

प्रश्न : २ सायकल में कितना अंतर होना चाहिये?

उत्तर : कम से कम ३ माह का।

प्रश्न : डॉक्टर हमे ICSI के बारे में जानकारी दीजिए।

उत्तर : ICSI याने इंट्रा सायटोप्लासमिक स्पर्म इंजेक्शन इसमें एक विशेष मायक्रोस्कोप का प्रयोग होता है। इसे कहते है मायक्रोमॅन्युप्युलेटर, इस की विशेषता यह है कि इसमें एक एक शुक्राणु स्त्रीबीज के अंदर छोडा जाता हैं जिन पुरुषों में शुक्राणुओं की संख्या कम होती है, ऐसे पुरुषों के लिये यह उपचार बहुत उपयोगी होता है। ICSI की खोज होने के पश्चात टेस्ट टयूब बेबी की सफलता के प्रतिशत में बहुत

वृद्धी हुई है अर्थात ICSI यह टेस्ट ट्यूब बेबी का ही एक भाग है।

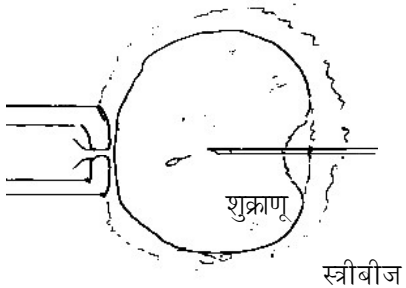

सुई की सहायता से शुक्राणु स्त्रीबीज में छोडा जाता है।

ICSI
(Intra Cytoplasmic Sperm Injection)

प्रश्न : टेस्ट ट्यूब बेबी के दुष्परिणाम क्या हैं?

उत्तर : १) जुडवाँ या ३ बच्चों का होना।

टेस्ट ट्युब बेबी में २ या ३ गर्भ गर्भाशय में डाले जाते है। इसकी वजह से जुड़वा या तीन बच्चे होने की संभावना बढ़ जाती है। ऐसा न हो इसलिये कई बार डॉक्टर्स १ या २ ही गर्भ गर्भाशय में छोडते हैं।

२) ओव्हेरियन हायपर स्टिम्युलेशन सिंड्रोम (OHSS) इसका प्रमाण बहुत कम है, इंजेक्शन्स के कारण यह दुष्परिणाम होता है, अत्याधिक स्त्री बीज तैयार होते हैं जिसके कारण स्त्री को तकलीफ होती है। जैसेपेट का फुलना, सांस लेने में तकलीफ होना, उलटी होना या पेट में दर्द, इनमें से कोई भी तकलीफ हो तो तुरंत डॉक्टर को दिखाना चाहिये। डॉक्टर तुरंत एडमीट करके उपचार शुरु करेंगे।

OHSS न हो इसके लिये ली जानेवाली सावधानी

– उपयुक्त मात्राा में पानी पीजिए (हर घंटे २ गिलास) प्रोटिन्स का सेवन अधिक करें जैसे अंडे, सोयामिल्क राजमा इत्यादि।

– आपको आराम करने की आवश्यकता है।

– तकलीफ होने पर तुरंत डॉक्टर की सलाह लीजिये।

प्रश्न : टेस्ट ट्यूब बेबी के बारे में अनेक प्रकार की अफवाए फैली हैं जैसे यह बच्चा आपका नहीं होता। वीर्य दूसरे का ही होता है वगैरे.....

उत्तर : यह सही नही है। यदि मरीज की उम्र अधिक हो, या हार्मोन की मात्राा बहुत कम हो, पुरुषों में शुक्राणुओं का अभाव हो तो टेस्ट ट्यूब बेबी में डोनर के शुक्राणु, डोनर का स्त्राीबीज लिये जाते है। किन्तु आपकी जानकारी बगैर नहीं। इस बारे में डॉक्टर से पहले ही बातचित कर सलाह लेनी चाहिये। आप जब सम्मतीपत्रा पर हस्ताक्षर करते हैं, तब इसमें इस विषय की संपूर्ण जानकारी होती हैं पूरी जानकारी पढकर ही हस्ताक्षर करने चाहिये। डरिये मत आपकी सम्मती के बीना या आपको अंधेरे में रखकर डॉक्टर्स कोई भी निर्णय नही लेते। अपने डॉक्टर पर विश्वास रखिये तथा उनसे पूरी जानकारी लीजिये।

कुछ लोगों के मन में भ्रम होता है कि टेस्ट ट्यूब बेबी के बच्चे में कुछ न कुछ व्यंग होता है। ऐसा बिल्कुल नहीं है। टेस्ट ट्यूब बेबी का बच्चा भी बिल्कुल नार्मल और बच्चों की तरह होता है, उसमें कोई व्यंग नहीं होता और इनकी बुद्धि भी अच्छी होती है। इस बारे में आप निश्चिंत रहिये।

प्रश्न : मेरी उम्र ४२ वर्ष है। डॉक्टर ने मुझे बताया है कि मेरी स्त्रीबीज ग्रंथी काम नहीं कर रही है। लेकिन मुझे माँ बनना है।

उत्तर : ४० वर्ष की उम्र के बाद AMH , FSH , LH ये खून की जाँच करके स्त्राीबीजग्रंथी काम कर रही है या नही इसका पता चलता हैं अगर स्त्राी बीज तय्यार नही होता तो ऐसे समय किसी अन्य स्त्राी के स्त्राी बीज का उपयोग कर आप को संतान प्राप्त हो सकती है। इसप्रकार की टेस्ट ट्यूब बेबी को ओव्हम डोनेशन कहते हैं। ऐसे समय आपकी पहचान में से किसी स्त्राी को जिसकी उम्र ३५ से कम है, जिसे खुद के बच्चें है उसे यदि वह आपकी मदद करने के लिये राजी है तो आप उसे विनंति कर सकती हैं किंतु इस बात का ध्यान रहे कि वह आपके पति की बहन न हो इस स्त्राी को इंजेक्शन देकर उसका स्त्राी बीज सोनोग्राफी तथा सुई की सहायता से निकाल लिया जाता है। इसके बाद यह स्त्राी बीज एवं आपके पति का वीर्य लेकर उनका मिलन कर तय्यार हुआ गर्भ आपके गर्भाशय में छोडा जाता है, जिस स्त्राी की स्त्राीबीज ग्रंथी काम नही करती उन स्त्रियों के लिये यह उपचार वरदान सिद्ध हुआ है।

प्रश्न : सरोगेट मदर याने क्या?

उत्तर : आपने सुना होगा, शाहरुख खान तथा अमीर खान की पत्नी को सरोगेट मदर की सहायता से पुत्रारत्न प्राप्त हुआ, जिससे यह विषय फिर से चर्चा में आया। सरोगेट मदर को कानूनन मान्यता दी गई है।

किसी स्त्री का गर्भाशय छोटा हो, अथवा उसमें कोई दोष हो अथवा किसी स्त्री के शरीर में गर्भाशय ही ना हो तो वह किसी दूसरी स्त्री के गर्भाशय का उपयोग कर सकती है। ऐसी परिस्थिति में उसका स्वयं का स्त्री बीज और उसके पति के शुक्राणु इनसे तय्यार गर्भ दुसरी स्त्री के गर्भाशय में छोडा जाता है। गर्भधारणा होने के पश्चात ९ माह के बाद बच्चा उन्हें सौंपा जाता हैं इस प्रकार माँ बनने का सपना पूर्ण हो सकता है। कानून की चौखट में रहकर व्यवस्थित एफिडेवीट करके ही सरोगसी का विचार कीजिए। आपके डॉक्टर आपको इस विषय में सलाह एवं जानकारी देंगे।

प्रश्न : मेरे पति के विर्य में शुक्राणु नही हैं। डॉक्टर ने बताएनुसार हमने उनकी बायोप्सी की तब पता चला कि उनके वीर्य में शुक्राणु बनते हैं किंतु नलिका में रुकावट (Block) है। इसके लिये क्या उपाय है।

उत्तर : विर्य की जाँच में शुक्राणु न होने पर पुरुष ग्रंथी की बायोप्सी की जाती है बायोप्सी में शुक्राणु पाए जाने पर दो उपाय हैं। पहिला उपाय–ऑपरेशन करके नलिका को जोड़ना किंतु इसमें सफलता मिलने की गुंजाईश कम होती है।

PESA Percutaneous epididymal sperm aspiration

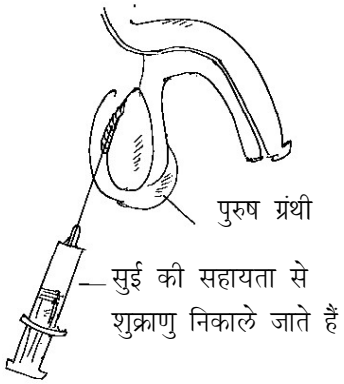

दूसरा उपाय याने PESA (Percutaneous Epididynal Sperm Aspiration) जिसमें पुरुष ग्रंथी से शुक्राणु सुई की सहायता से निकालकर शुक्राणु और स्त्रीबीज का ICSI की सहायता से मिलन किया जाता है। इसमें आपके पति को उसका खुद का बच्चा होने का समाधान होता है। इस प्रक्रिया में सफलता की गुंजाईश अधिक होती है। इसे PESA - ICSI कहते हैं।

प्रश्न : मैं टेस्ट ट्यूब बेबी के द्वारा बेटा ही चाहती हूँ।

उत्तर : माफ कीजिये। अपने देश में बेटा ओर बेटी के बीच का भेदभाव यह समाज का एक बहुत बडा दोष है। कृपया लडका और लडकी में भेदभाव मत कीजिये। और याद रखिये टेस्ट टयूब बेबी में २ से ३ गर्भ गर्भाशय में छोडे जाते हैं। इनमें लडका या लडकी का गर्भ जाँच करने की कोई पद्धति, अस्तित्व में नही है। इसलिये इस विषय में डॉक्टर से चर्चा बिल्कुल मत कीजिये। आप बच्चा चाहती है तो आपके लिये बेटा हो या बेटी दोनो समान होने चाहिये, सुप्रीम कोर्ट के कानून के अनुसार गर्भ का लिंग पूछना या

बताना भी गुनाह है। और ऐसा करने पर ५ वर्ष जेल की सजा दी जाती है।

प्रश्न : मुझे गर्भ धारणा नही होती अत: बहुत टेंशन हो जाता हैं क्या करुं?

उत्तर : मन:शांती, अच्छे विचार रखिए, सफलता मिलने का विश्वास तथा पति–पत्नि के बीच अच्छे संबंध ये सारी बातें इस इलाज के लिये आवश्यक है। कभी कभी माँ या सासू माँ की रट, या समाज के अन्य घटकों का इस विषय में दृष्टिकोन मन को निराशा की गर्त मे ढकेलता है। परंतु आप इस नैराश्य की अवस्था से बाहर आईये। खुश रहिये। पति–पत्नि के आपसी संबंध अच्छे होना अत्यंत आवश्यक हैं एक दूसरे को दोष मत दीजिये। एक दूसरे को संभालना जरुरी है। अगर नौकरी करती हैं तो अपने काम में मन लगाइये। आपकी कोई मनपसंद बात किजीए। पुस्तकें पढिये जिससे आपका मन खुश रहे। संभव हो तो योगा, ध्यान, प्रार्थना कीजिये, जिससे आपको मन:शांती प्राप्त हो। इससे आपको जल्द ही वांछित यश प्राप्त होगा।

प्रश्न : यदि बच्चा गोद लेना चाहे तो?

उत्तर : बच्चा गोद लेने के लिए उपयुक्त संस्था का सहारा लिजीए। याद रखिये बच्चा गोद लेते समय किसी भी तरह से कानून की चौखट के बाहर मत जाईये। ऐसा करने से सजा हो सकती है। आप बच्चा गोद लेने के लिये निम्न संस्था से संपर्क कर सकते हैं।

'वरदान' IAPA and child welfare ३४९/२,
कस्तुरबा भवन बजाज नगर, नागपूर–१०
Phohne : 2243040, 6540187
E-mail : varadan_ngp@yahoo.com

❖❖❖

Save Girl Child

टेस्ट ट्यूब बेबी का रोचक इतिहास

आज टेस्ट ट्यूब बेबी का नाम घर–घर पहुँच गया है। टेस्ट ट्यूब बेबी की सहायता से संतान होने की बात हम सुनते हैं। इस संसार में करीबन २० लाख बच्चें इस नविन तम तंत्राज्ञान के द्वारा पैदा हुए हैं। इसका इतिहास भी बडा मनोरंजक है।

इस पद्धति द्वारा बच्चा पैदा होना ये कोई संजोग की बात या चमत्कार नहीं है। बल्कि इसके पिछे अनेक वर्षों की मेहनत एवं तपस्या है। क्राईस पूर्व ५ वे शतक में ऐसी भावना थी की स्त्राी–पुरुष दोनो में विर्य का निर्माण होता है, और इसी वीर्य के मिलनसे गर्भ की निर्मिति होती है। इसके बाद के शताब्दी में ॲरिस्टॉटल ने प्रथम इस बात की खोज की कि स्त्राी के शरीर में स्त्राीबीज ग्रंथी होती है। इस स्त्राीबीज और पुरुष के शुक्राणुओं के मिलने से बच्चा पैदा होता है।

इसके अनेक वर्षों पश्चात १७८६ में जॉन हंटर ने एक प्रयोग करके देखा। उपचार किये जानेवाले एक पुरुष में जन्मत: व्यंग होने के कारण शारिरीक संबंध बनाना असंभव था। ऐसे पुरुष का वीर्य उसने उस पुरुष की पत्नि के गर्भ में छोडा और इससे स्त्राी में गर्भधारणा संभव हुई। इसे कहते है इंट्रायुटेराईन इनसेमीनेशन IUI. इसके बाद अनेक शास्त्राज्ञों ने इस विषय पर लगातार संशोधन जारी रखा।

इसके बाद हाल ही में २० वी सदी के मध्य में अनेक शास्त्राज्ञों ने प्राणियों पर संशोधन किया। उनका प्रयत्न स्त्रीबीज तथा शुक्राणुओं के मिलन से प्रयोगशाला में गर्भनिर्माण करना यह था।

इ.स. १९५४ में थीबॉल्ट नामक शास्त्राज्ञ को खरगोश में इसप्रकार गर्भ निर्मिती करने में सफलता मिली। और १९५९ में इस प्रक्रिया द्वारा नया जीव पैदा हुआ। इसी समय स्त्रीरोग विशेषज्ञो ने भी इस विषय में अभ्यास करना शुरु किया। १९५९ में न्युयॉर्क शहर में हुई विश्व परिषद में इस विषय पर चर्चा हुई।

एक तरफ ये सब चल रहा था तो दूसरी ओर एक ध्येय प्रेरित व्यक्ति था जिसने मानव जाति में इस प्रकार गर्भ निर्मिती का बिड़ा उठाया था। उन्होंने खुद की प्रयोगशाला में चुहों पर यह प्रयोग सफल किया था। इस विषय पर उनका अभ्यास भी बहुत ज्यादा था। उस व्यक्ति का नाम था रॉबर्ट एडवर्ड। रॉबर्ट ने 'चुहों का प्रजनन' इस विषय में पीएच.डी. की थी। अत्यंत मेहनत, सुचारु रुप से कार्य और गहरा अभ्यास इन गुणों के आधार पर असंभव को संभव करने निकल पडे थे। उनका ध्येय था मनुष्यों में प्रयोगशाला में गर्भ निर्माण करना। अमेरिका के बाल्टीमोर के सुप्रसिद्ध जॉन हॉपकिन्स इन्स्टिट्यूट में उनके पीएच.डी. का विद्यार्थी बॅरी बॅवीस्टर के साथ मिलकर

संशोधन करके १९६९ में स्त्रीबीज को गर्भ रुपान्तरीत करने में वह सफल हुए।

इस बीच अनेक परीषदों में वह अन्य डॉक्टरोंसे मिलते रहे। अपने विषय के संशोधन पर वार्तालाप करते रहे। अनेक स्त्रीरोग विशेषज्ञो से मुलाकात करते रहे और उनके संशोधन का प्रत्यक्ष उपयोग कैसे किया जा सकता है, इस पर विचार विनिमय करते रहे। किंतु उनके हाथ निराशा ही लगी। कई लोगों ने उनके संशोधन का उपहास किया तो किसी ने उसकी तरफ ध्यान नहीं दिया।

इस बीच संजोग से लंडन की परिषद में उनकी मुलाकात स्त्रीरोग तज्ञ पॅट्रीक स्टेप्टो से हुई। यह उत्साही स्त्रीरोगतज्ञ तब ओल्डहम नामक एक छोटे से गांव में काम करते थे। वह लॅप्रोस्कोपी के शास्त्रा में निपुण थे। लॅप्रोस्कोपी की सहायता से स्त्रीबीजग्रंथी से स्त्रीबीज निकालकर देने के लिये वह तुरंत तैयार हुए। और उस दिन एडवर्ड और स्टेप्टो दोनों को भी कल्पना नहीं थी कि उनकी यह जोडी इतिहास रचनेवाली है।

१९७१ में एडवर्ड केंब्रिज में काम करने लगे। केवल इस काम के लिये एडवर्ड अमेरिका से इंग्लंड आ गये। परंतु केंब्रिज से ओल्डहम १८० मी के अंतर पर होने के कारणउन्हे कठिनाई होने

लगी। इस जोडी का संशोधन कार्य शुरु था। करीबन ४ वर्ष के पश्चात १९७५ में इन्हें इस पद्धती से गर्भधारणा करने में य श प्राप्त हुआ। परन्तु कहते हैं न नसीब का साथ और ईश्वर के आशिर्वाद के बिना कुछ भी संभव नही होता। यही सब इनके साथ हुआ। गर्भधारणा नलिका में ही रह गई और इन्हे निराशा ही मिली।

इसके बाद इन दोनों ने करीबन ३२ स्त्रियों में गर्भप्रत्यार्पण करके देखा किंतु सफलता नहीं मिली। इंगलँड के अनेक प्रख्यात स्त्रीरोग विशेषज्ञ इनपर आरोप करने लगे। परंतु फिर भी ये दोनों अपने निश्चय से डगमगाये नही। इन्होने अपना कार्य जारी रखा।

२५ जुलाई १९७८ यह दिन सभी स्त्रीरोगतज्ञ ही नही संपूर्ण विश्व की दृष्टि से अत्यंत महत्त्वपूर्ण साबित हुआ। एडवर्ड और स्टेप्टो के लिये तो यह अत्यंत भाग्यशाली और स्वर्णिम दिन था।

लुईस ब्राऊन नामक अत्यंत सुंदर, कोमल और प्यारी सी बच्ची का इस दिन जन्म हुआ। यह बच्ची टेस्ट ट्यूब बेबी की विश्व को दी गई प्रथम भेंट थी।

आज इस घटना को ३७ वर्ष से अधिक समय हुआ है। इस बीच अनेक घटनाएँ घटी। अनेक नये संशोधन हुए और टेस्ट ट्यूब बेबी की प्रक्रिया को विश्व में मान्यता प्राप्त हुई। अनेक संतानहीनों

को इसके द्वारा संतान प्राप्ती हुई। और उन के आँसू इस तरह पोछे गये।

२००८ में इसी लुईस ब्राऊन को कन्या रत्न की प्राप्ती हुई। टेस्ट ट्यूब बेबी से पैदा हुई बच्ची आज माँ बन गई है।

सन २०१० में एडवर्ड को नोबल पुरस्कार प्राप्त हुआ जो एडवर्ड के लिये उनके संशोधन का सर्वोच्च पुरस्कार था।

❖❖❖